अंतिम परामर्शी 2015-16 कपास फसल मौसम

देश के मध्य तथा दक्षिणी कपास क्षेत्र में कपास की फसल अंतिम चुनाई अवस्था में है।

1. फसल में अभी भी जहाँ प्रति पौधा 8-10 हरे गूलर हैं , वहाँ 20 से 50 हरे गूलर प्रति एकड़ पूरे खेत से लेकर खोलकर देखकर निगरानी करें। इन खोले हुए 20-50 हरे गुलरों में जब गुलाबी सूँडी की क्षति 20% से अधिक पाए जाने पर पाइरेथ्राइड कीटनाशक का एक छिड़काव फसल पर तुरंत करें। ऐसा करने से हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी की आगे होने वाली क्षति रुकेगी। पूरी तरह से खुले हुए गूलरों से ही कपास की चुनाई करने के बाद ही इस कीटनाशक का छिड़काव करें।

2. सिंचाई करके तथा उर्वरक देकर फसल अवधि को आगे न बढ़ाएँ क्योंकि बाद में आए गूलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति अत्याधिक होती है। पेडी की फसल तथा ग्रीष्मकालीन फसल लेने से बचें। इससे गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम होगा तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूँडियों में प्रतिरोधकता निर्माण में कमी आएगी।

3. कपास की चुनाई सुबह 10.00 बजे के बाद ही पूरी तरह से खुले हुए गूलरों से करें। बाजार में कपास का अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। पहले चुनी हुई कपास को अच्छी तरह से सुखाकर ही साफ कपड़े के थैलों में अलग से भरकर रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें। कपास चुनाई का कार्य जल्दी से जल्दी कमाप्त करें।

4. नाशीकीटों, रोगों तथा खरपतवारों के जीवन चक्र को खण्डित करने के लिए फसल-चक्र अपनाएँ।

5. भण्डार-गृह अथवा घरों में संग्रहीत कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंगों का स्त्रोत बन सकता है। यदि यह बीज गुलाबी सूँडी से क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरंत नष्ट कर दें।

6. कपास के डंठलों, फसल अवशेषों तथा सूँडियों से प्रकोपग्रस्त कपास को संग्रहीत न करें। अगले फसल मौसम में नाशीकीटों के प्रकोप की रोकथाम के लिए कपास के डंठलों , सुखी लकड़ियों तथा फसल अवशेषों को खेत से निकाल कर शीघ्र नष्ट कर दें। इन्हें जलाने के स्थान पर इनका विधिवत कम्पोस्ट बनाएँ।

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.सी.आर. के निम्न कपास परामर्शकों को धन्यवाद! प्रोत्साहक फीडबैक देने वालों को भी धन्यवाद। उत्तरी भारत में कपास की बुआई अप्रैल , 2016 में प्रारम्भ होगी। कपास पर आगामी परामर्शी मार्च , 2016 में प्रारम्भ होगी तब तक के लिए किसान भाईयों तथा कपास के शुभचिंतकों से विदाई लेते हैं।

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.सी.आर.
परामर्शी दल